कुरआने पाक सहीह मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई क़ाइदा

Madani Qaaida (Hindi)

म-दनी क़ाइदा

पेशकश: मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَاحَبِيْبَ اللّٰه

कुरआने पाक सहीह मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई क़ाइदा

पेशकश : **मजलिसे मद्र-सतुल मदीना** (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

(म-दनी क़ाइदा)

येह किताब **(म-दनी क़ाइदा)**

मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ۵۱ص۱۳۸دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हुरूफ़ के मख़ारिज

मख़्रज के लु-ग़वी मा'ना हैं निकलने की जगह इस्तिलाहे तज्वीद में जिस जगह से ह़र्फ़ अदा होता है उसे मख़्रज कहते हैं।

हुरूफ़	नाम	मख़ारिज
ء.ھ	हुरूफ़े ह़-लक़िय्यह	ह़ल्क़ के नीचे वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
ع.ح	" "	ह़ल्क़ के दरमियान वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
غ.خ	" "	ह़ल्क़ के ऊपर वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
ق	हुरूफ़े ल-हविय्यह	ज़बान की जड़ और तालू के नर्म ह़िस्से से अदा होता है।
ك	" "	ज़बान की जड़ और तालू के सख़्त ह़िस्से से अदा होता है।
ج.ش.ی	हुरूफ़े श-जरिय्यह	ज़बान के दरमियान और तालू के दरमियान से अदा होते हैं।
ض	ह़र्फ़े ह़ाफ़ियह	ज़बान की करवट और ऊपर की दाढ़ों की जड़ से अदा होता है।
ل.ن.ر	हुरूफ़े त़-रफ़िय्यह	ज़बान का कनारा और दांतों की जड़ के तालू की जानिब वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
ت.د.ط	हुरूफ़े नित़इय्यह	ज़बान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से अदा होते हैं।
ث.ذ.ظ	हुरूफ़े लि-सविय्यह	ज़बान का सिरा और ऊपर के दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
ز.س.ص	हुरूफ़े स-फ़ीरियह	ज़बान की नोक और दोनों दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
ف	हुरूफ़े श-फ़विय्यह	ऊपर के दांतों के कनारे और निचले होंट के तर ह़िस्से से अदा होता है।
ب	" "	दोनों होंटों के तर ह़िस्से से अदा होता है।
م	" "	दोनों होंटों के ख़ुश्क ह़िस्से से अदा होता है।
و	" "	दोनों होंटों की गोलाई से अदा होता है।
ख़ैशूम (नाक का बांसा)		येह गुन्ना का मख़्रज है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से क़ब्ल ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا
رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَ الْاِكْرَام

(रूह़ानी ह़िकायात, स. 68)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये । وَالسَّلَام مَعَ الْاِكْرَام

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

म-दनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

नाम ____________________

मद्रसा ____________________

द-रजा नम्बर ____________________

पता ____________________

____________ फ़ोन नम्बर ____________

पहले इसे पढ़िये

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

कुरआने मजीद, फुरक़ाने ह़मीद अल्लाह तआ़ला का ऐसा कलाम है जो कि रुश्दो हिदायत और इ़ल्मो ह़िक्मत का अनमोल ख़ज़ाना है। **नबिय्ये मुकर्रम**, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : خَيْرُ كُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَ عَلَّمَهٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है, जिस ने कुरआन को सीखा और दूसरों को सिखाया।

(صحيح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خير كم......الخ، الحديث ٥٠٢٧، ص٤٣٥)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तह़्त ता'लीमे **कुरआने पाक** को आ़म करने के लिये अन्दरून व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम **"मद्र-सतुल मदीना"** क़ाइम हैं। पाकिस्तान में ता दमे तह़रीर कमो बेश **72,000** (बहत्तर हज़ार) म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन रोज़ाना बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) की तरकीब होती है जिन में इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से ह़ुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते, दुआ़एं याद करते हैं नीज़ नमाज़ों और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। इ़लावा अज़ीं ब शुमूल पाकिस्तान दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम **मद्र-सलतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) भी क़ाइम किये जाते हैं। एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ ता दमे तह़रीर फ़क़त़ **बाबुल मदीना** (कराची) में इस्लामी बहनों के **1317** (एक हज़ार तीन सो सत्तरह) मद्रसे तक़रीबन रोज़ाना क़ाइम होते हैं जिन में **12017** (बारह हज़ार सत्तरह) इस्लामी बहनें कुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! **मद्र-सतुल मदीना** के तजरिबा कार असातिज़ए किराम ने **कुरआने पाक** को आसान अन्दाज़ में सीखने के लिये **म-दनी क़ाइदा** मुरत्तब किया है । **"म-दनी क़ाइदा"** में छोटी और बड़ी उम्र के त़-लबा व त़ालिबात के लिये तज्वीद के बुन्यादी क़वाइद ह़त्तल इम्कान आसान अन्दाज़ में पेश किये गए हैं ताकि म-दनी मुन्ने, म-दनी मुन्नियां और इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आसानी से दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ना सीख जाएं। जय्यिद कुर्रा ह़ज़रात (کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) ने इल्मे तज्वीद के ह़वाले से बहुत एह़तियात़ के साथ **म-दनी क़ाइदा** पर नज़रे सानी फ़रमाई है।

म-दनी क़ाइदा के त़रीक़ए तदरीस के लिये **रहनुमाए मुदर्रिसीन** भी मुरत्तब की गई है, जिस में अस्बाक़ पढ़ाने का त़रीक़ए कार तफ़्सील के साथ बताया गया है । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अन्क़रीब म-दनी क़ाइदा की **V.C.D दा'वते इस्लामी** के इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी की जाएगी, जिस से येह **म-दनी क़ाइदा** समझ कर कुरआने पाक पढ़ने में मज़ीद आसानी होगी।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना** अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा इस म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" के तह़्त अपनी इस्लाह़ के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

29 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (1) : हुरूफ़े मुफ़्रिदात

- हुरूफ़े मुफ़्रिदात या'नी हुरूफ़े तहज्जी 29 हैं।
- हुरूफ़े मुफ़्रिदात को तज्वीद व क़िराअत के मुताबिक़ अ़-रबी लहजे में अदा करें उर्दू तलफ़्फ़ुज़ से परहेज़ करें या'नी بے، تے، ثے، حے، خے، طوے، ظوے वग़ैरा हरगिज़ न पढ़ें बल्कि بَا، تَا، ثَا، حَا، خَا، طَا، ظَا पढ़ें।
- इन 29 हुरूफ़ में सात "7" हुरूफ़ ऐसे हैं जो हर हालत में पुर या'नी मोटे पढ़े जाते हैं इन्हें हुरूफ़े मुस्ता'लिया कहते हैं और वोह येह हैं خ، ص، ض، ط، ظ، غ، ق इन का मज्मूआ़ خُصَّ ضَغْطٍ قِظْ है।
- होंटों से सिर्फ़ चार हुरूफ़ अदा होते हैं। ب، ف، م، و। इन के इलावा बाक़ी हुरूफ़ पर होंट न हिलने दें।

ا (اَلِفْ)	ب (بَا)	ت (تَا)	ث (ثَا)	ج (جِيْمْ)
ح (حَا)	خ (خَا)	د (دَالْ)	ذ (ذَالْ)	ر (رَا)
ز (زَا)	س (سِيْنْ)	ش (شِيْنْ)	ص (صَادْ)	ض (ضَادْ)
ط (طَا)	ظ (ظَا)	ع (عَيْنْ)	غ (غَيْنْ)	ف (فَا)
ق (قَافْ)	ك (كَافْ)	ل (لَامْ)	م (مِيْمْ)	ن (نُوْنْ)
و (وَاوْ)	ھ (هَا)	ء (هَمْزَهْ)	ی (يَا)	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (2) : हुरूफ़े मुरक्कबात

- दो "2" या इस से ज़ाइद हुरूफ़ मिल कर एक मुरक्कब बनता है।
- मुरक्कब हुरूफ़ को मुफ़्रिद हुरूफ़ की त़रह़ अलग अलग पढ़ें।
- इस सबक़ में भी तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखते हुए मा'रूफ़ या'नी अ़-रबी लहजे में पढ़ें।
- जब दो या इस से ज़ाइद हुरूफ़ मिला कर लिखे जाते हैं तो उन की शक्ल कुछ बदल जाती है अक्सर हुरूफ़ का सर लिखा जाता है और धड़ छोड़ दिया जाता है।
- जो हुरूफ़ मुरक्कब होने की ह़ालत में एक जैसे लिखे जाते हैं उन की नुक़्तों के रद्दो बदल से पहचान करें।

تا	نا	با	لا	لا	ا
قا	فا	سا	شا	ثا	يا
صا	غا	عا	حا	خا	جا
كا	ها	ما	ظا	طا	ضا
طب	كف	كش	كت	كب	لب
قل	فل	ضل	صل	شل	سل
ظن	طن	كن	كل	غل	عل

جد	خد	حد	عد	غد	خذ
خز	حر	بر	یر	طر	ظر
بم	نم	تم	یم	ثم	شم
لج	عج	حج	یج	بع	یغ
نص	فص	قض	بس	یس	تس
فق	قق	شق	سق	عق	حق
لك	فك	قك	كو	هو	مو
بی	نی	تی	یی	ؤ	ئ
بة	نة	تة	یة	عط	فظ
بلب	بهم	بعد	عبد	حمد	هلك
یهب	خطف	ثمن	حسن	فئة	سخط

خلق	فلق	علق	نصر	قتل	يلج
تجد	طبع	بلغ	نفس	جنت	سئل
قسط	صفت	شمس	خشى	غير	غبر
مطر	عشر	عسر	ظلل	شكر	بسم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (3) : ह़-रकात

- ह़-र-कत की जम्अ़ ह़-रकात है। ज़बर ـَ , ज़ेर ـِ और पेश ـُ को ह़-रकात कहते हैं। ज़बर और पेश ह़र्फ़ के ऊपर जब कि ज़ेर ह़र्फ़ के नीचे होता है।
- जिस ह़र्फ़ पर कोई ह़-र-कत हो उसे मु-तह़र्रिक कहते हैं।
- ज़बर ـَ मुंह और आवाज़ को खोल कर, ज़ेर ـِ आवाज़ को नीचे गिरा कर और पेश ـُ होंटों को गोल कर के अदा करें।
- ह़-रकात को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ें।
- "الف" पर कोई ह़-र-कत या जज़्म आ जाए तो उसे हम्ज़ह "اَ اِ اُ" पढ़ें।
- "ر" पर ज़बर या पेश हो तो ر को पुर और "ر" के नीचे ज़ेर हो तो "ر" को बारीक पढ़ें।

اَ	اِ	اُ	بَ	بِ	بُ
تَ	تِ	تُ	ثَ	ثِ	ثُ

جَ جِ جُ حَ حِ حُ
خَ خِ خُ دَ دِ دُ
ذَ ذِ ذُ رَ رِ رُ
زَ زِ زُ سَ سِ سُ
شَ شِ شُ صَ صِ صُ
ضَ ضِ ضُ طَ طِ طُ
ظَ ظِ ظُ عَ عِ عُ
غَ غِ غُ فَ فِ فُ
قَ قِ قُ كَ كِ كُ
لَ لِ لُ مَ مِ مُ
نَ نِ نُ وَ وِ وُ

هَ هِ هُ عَ عِ عُ

یَ یِ یُ

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (4)

- इस सबक़ को रवां पढ़ें।
- ह-रकात की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें।
- हुरूफ़े क़रीबुस्सौत या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क़ करें।

تَ تِ تُ طَ طِ طُ

زَ زِ زُ ذَ ذِ ذُ

ظَ ظِ ظُ ثَ ثِ ثُ

سَ سِ سُ صَ صِ صُ

دَ دِ دُ ضَ ضِ ضُ

كَ كِ كُ قَ قِ قُ

هَ هِ هُ حَ حِ حُ
ءَ ءِ ءُ عَ عِ عُ
خَ خِ خُ غَ غِ غُ
بَ بِ بُ مَ مِ مُ
وَ وِ وُ فَ فِ فُ
لَ لِ لُ نَ نِ نُ
رَ رِ رُ جَ جِ جُ
شَ شِ شُ یَ یِ یُ
يَا خَبِيْرُ
सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनने के लिये चलते फिरते पढ़ते रहें।
(मसाइलुल कुरआन, स. 290)
इल्म के पांच द-रजात
(1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना
(4) जो सीखा उस पर अ़मल करना (5) जो इल्म ह़ासिल हो उसे दूसरों तक पहुंचाना।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (5) : तन्वीन

- दो ज़बर ـً , दो ज़ेर ـٍ और दो पेश ـٌ को तन्वीन कहते हैं। जिस हर्फ़ पर तन्वीन हो उसे मुनव्वन कहते हैं।
- तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आख़िर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की तरह होती है। जैसे : اً = اَنْ ، اٍ = اِنْ ، اٌ = اُنْ
- तन्वीन के हिज्जे इस तरह करें مًا : ميم दो ज़बर مَنْ , مٍ : ميم दो ज़ेर مِنْ , مٌ : ميم दो पेश مُنْ = مًا ، مٍ ، مٌ
- ज़बर की तन्वीन के बा'द कहीं "ا" और कहीं "ى" लिखा जाता है हिज्जे करते वक़्त उस का नाम न लें।

تًا	تٍ	ةٌ	طًا	طٍ	طٌ
زًا	زٍ	زٌ	ذًا	ذٍ	ذٌ
ظًا	ظٍ	ظٌ	ثًا	ثٍ	ثٌ
سًا	سٍ	سٌ	صًا	صٍ	صٌ
دًى	دٍ	دٌ	ضًا	ضٍ	ضٌ

كًا كٍ كٌ قًا قٍ قٌ
هًا هٍ هٌ حًا حٍ حٌ
عًا عٍ عٌ عًا عٍ عٌ
خًا خٍ خٌ غًا غٍ غٌ
بًا بٍ بٌ مًا مٍ مٌ
وًا وٍ وٌ فًا فٍ فٌ
لًا لٍ لٌ نًا نٍ نٌ
رًا رٍ رٌ جًا جٍ جٌ
شًا شٍ شٌ ىً ىٍ ىٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (6)

- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें ।
- ह़-रकात, तन्वीन और तमाम हुरूफ़ बिल ख़ुसूस हुरूफ़े मुस्ता'लिया की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें ।
- हिज्जे इस त़रह़ करें : مَلِكٌ : میم ज़बर مَ , لام ज़ेर لِ = مَلِ , کاف दो पेश كٌ = مَلِكٌ

نَزَلَ	خَلَقَ	صَدَقَ	يَدَكَ	بَلَغَ	طَبَعَ
جَعَلَ	فَعَلَ	نَظَرَ	ذَكَرَ	كَسَبَ	اِبِلِ
رُسُلُ	صُحُفُ	ثُلُثُ	سُدُسُ	حُرُمُ	رُبُعُ
حَمِدَ	خَطِفَ	مَلِكِ	تَزِدِ	تَجِدُ	يَلِجُ
قُتِلَ	سُئِلَ	قُرِئَ	قَمَرِ	كِبَرُ	حُشِرَ
اَحَدًا	مَرَضًا	عَمَلًا	هُدًى	طُوًى	قُرًى
مَسَدٍ	ثَمَنٍ	سَخَطٍ	ظُلَلٍ	فِئَةٍ	عُنُقٍ
نَفَرٌ	صَمَدٌ	غَضَبٌ	لَعِبٌ	اُذُنٌ	كُتُبٌ

دَرَجَةٌ	قِرَدَةٌ	عَلَقَةٍ	سَفَرَةٍ	شَجَرَةٌ	قَتَرَةٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (7) : हुरूफ़े मद्दा

- इस अ़लामत "ـْ" को जज़्म कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- साकिन ह़र्फ़ अपने से पहले मु-तह़र्रिक ह़र्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- हुरूफ़े मद्दा तीन हैं। - الف ، وآو ، یا
- الف से पहले ज़बर हो तो الف मद्दा होगा जैसे بَا , وآو साकिन "وْ" से पहले पेश हो तो وآو मद्दा होगा जैसे بُوْ , یا साकिन "یْ" से पहले ज़ेर हो तो یا मद्दा होगा जैसे بِیْ
- हुरूफ़े मद्दा को एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- हिज्जे इस त़रह़ करें। بَا : بَا الف ज़बर بَا , بُوْ : بَا وآو पेश بُوْ , بِیْ : بَا یا ज़ेर بِیْ = بَا ، بُوْ ، بِیْ

بَا	بُوْ	بِیْ	تَا	تُوْ	تِیْ
ثَا	ثُوْ	ثِیْ	جَا	جُوْ	جِیْ
حَا	حُوْ	حِیْ	خَا	خُوْ	خِیْ
دَا	دُوْ	دِیْ	ذَا	ذُوْ	ذِیْ
رَا	رُوْ	رِیْ	زَا	زُوْ	زِیْ
سَا	سُوْ	سِیْ	شَا	شُوْ	شِیْ

صَا صُوْ صِیْ ضَا ضُوْ ضِیْ
طَا طُوْ طِیْ ظَا ظُوْ ظِیْ
عَا عُوْ عِیْ غَا غُوْ غِیْ
فَا فُوْ فِیْ قَا قُوْ قِیْ
کَا کُوْ کِیْ لَا لُوْ لِیْ
مَا مُوْ مِیْ نَا نُوْ نِیْ
وَا وُوْ وِیْ هَا هُوْ هِیْ
اٰ اُوْ اِیْ یَا یُوْ یِیْ
یَا عَلِیْمُ
21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के 40 रोज़ तक नहार मुंह पियें (या पिलाएं) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (पीने वाले का) ह़ाफ़िज़ा रोशन हो जाएगा । (श-ज-रए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या, स. 46)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (8) : खड़ी ह़-रकात

- खड़े ज़बर ـٰ , खड़े ज़ेर ـٖ और उल्टे पेश ـٗ को खड़ी ह़-रकात कहते हैं।
- खड़ी ह़-रकात हुरूफ़े मद्दा के क़ाइम मक़ाम हैं इस लिये खड़ी ह़-रकात को भी हुरूफ़े मद्दा की त़रह़ एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- इस सबक़ में भी हुरूफ़े क़रीबुस्सौत या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

طٗ	طٖ	طٰ	تٗ	تٖ	تٰ
ذٗ	ذٖ	ذٰ	زٗ	زٖ	زٰ
ثٗ	ثٖ	ثٰ	ظٗ	ظٖ	ظٰ
صٗ	صٖ	صٰ	سٗ	سٖ	سٰ
ضٗ	ضٖ	ضٰ	دٗ	دٖ	دٰ
قٗ	قٖ	قٰ	كٗ	كٖ	كٰ
حٗ	حٖ	حٰ	هٗ	هٖ	هٰ

عُ	عِ	عَ	اُ - عُ	اِ - عِ	اَ - عَ
غُ	غِ	غَ	خُ	خِ	خَ
مُ	مِ	مَ	بُ	بِ	بَ
فُ	فِ	فَ	وُ	وِ	وَ
نُ	نِ	نَ	لُ	لِ	لَ
جُ	جِ	جَ	رُ	رِ	رَ
یُ	یِ	یَ	شُ	شِ	شَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सबक़ नम्बर (9) : हुरूफ़े लीन

- हुरूफ़े लीन दो (2) हैं واؤ और یا ।
- واؤ साकिन से पहले ज़बर हो तो واؤ लीन होगा जैसे جَوْ, یا साकिन से पहले ज़बर हो तो یا लीन होगा जैसे جَیْ ।
- हुरूफ़े लीन को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये नरमी से मा'रूफ़ पढ़ें ।
- हिज्जे इस तरह करें । بَوْ : بَا وَاؤْ ज़बर بَوْ , بَیْ : بَا یَا ज़बर بَیْ = بَیْ بَوْ

بَوْ بَیْ تَوْ تَیْ ثَوْ ثَیْ
جَوْ جَیْ حَوْ حَیْ خَوْ خَیْ
دَوْ دَیْ ذَوْ ذَیْ رَوْ رَیْ
زَوْ زَیْ سَوْ سَیْ شَوْ شَیْ
صَوْ صَیْ ضَوْ ضَیْ طَوْ طَیْ
ظَوْ ظَیْ عَوْ عَیْ غَوْ غَیْ
فَوْ فَیْ قَوْ قَیْ کَوْ کَیْ
لَوْ لَیْ مَوْ مَیْ نَوْ نَیْ
وَوْ وَیْ ھَوْ ھَیْ اَوْ اَیْ
یَوْ یَیْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सबक़ नम्बर (10)

- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें।
- इस सबक़ में पिछले तमाम अस्बाक़ या'नी ह़-रकात, तन्वीन, ह़ुरूफ़े मद्दा, खड़ी ह़-रकात और ह़ुरूफ़े लीन शामिल हैं।
- इन तमाम क़वाइद की अदाएगी और पहचान की पुख़्तगी के साथ साथ सिह़्ह़ते लफ़्ज़ी का ख़ास ख़याल रखें बिल ख़ुसूस ह़ुरूफ़े मुस्ता'लिया।
- हिज्जे करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि हर ह़र्फ़ को पिछले ह़ुरूफ़ से मिलाते जाएं। जैसे مَوْضُوْعَةٌ के हिज्जे इस त़रह़ करें :
- مِیْم ज़बर مَ, وَاو مَوْ, ضَاد पेश ضُو = مَوْضُو, عَیْن ज़बर عَ = مَوْضُوعَ, ة दो पेश ةٌ = مَوْضُوعَةٌ

لَوْحٍ	حَوْلٍ	دِيْنٌ	بَشِيْرٌ	قَوْمِهٖ	هَدَيْنَا
بَيْنَنَا	زَاهِدِيْنَ	رَاكِعُوْنَ	عِيْسٰى	مُوْسٰى	صُدُوْرِ
اَوْ	قَوْلًا	قَوْمًا	مِيْقَاتًا	مُنِيْرًا	شَيْءٌ
شَيْئًا	هٰرُوْنَ	سُلَيْمٰنَ	شُهُوْدٌ	قُعُوْدٌ	وَدُوْدٌ
يَوْمَئِذٍ	مَوْعِدُهٗ	كَرِيْمٍ	وَكِيْلٍ	نُوْرِهٖ	اَرَءَيْتَ
اَفَرَءَيْتَ	مَوْعِظَةٌ	مَوْضُوْعَةٌ	مَوْءٗدَةُ	سَمِيْعٌ	عَزِيْزٌ
يَدَيْهِ	حَيْثُ	غَيْبٌ	سَمٰوٰتٍ	كَلِمٰتٍ	لَشَيْءٌ
قُرَيْشٍ	بِاٰيٰتِنَا	مِهٰدًا	عِلْمٌ	كِتٰبٌ	سَلٰمٌ
اُوْذِيْنَا	اُوْتِيْنَا	اَوْحَيْنَا	نُوْحِيْهَا	اٰتُوْنِيْ	اٰمِنُوْا بِيْ
تُدِيْرُوْنَهَا	فَلَا تَمِيْلُوْا	مَا خَلَفْتُمُوْنِيْ	فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ	وَلَا يُحِيْطُوْنَ	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (11) : सुकून (जज़्म)

- जैसा कि आप पीछे पढ़ चुके हैं इस अ़लामत "ـْـ" को जज़्म कहते हैं जिस ह़र्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- जज़्म वाला ह़र्फ़ अपने से पहले मु-तह़र्रिक ह़र्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- ह़म्ज़ए साकिना (ءْ ، أْ) को हमेशा झटका दे कर पढ़ें।
- ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला पांच हैं ق ، ط ، ب ، ج ، د इन का मज्मूआ़ قُطُبُ جَدٍّ है।
- क़ल्क़ला के मा'ना जुम्बिश और ह़-र-कत के हैं इन ह़ुरूफ़ के अदा करते वक़्त मख़्रज में जुम्बिश सी हो जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकले।
- जब ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला साकिन हों तो उन में क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा।
- इस सबक़ में ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला व ह़म्ज़ए साकिना की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें और मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

اَتْ	اِتْ	اُتْ	اَطْ	اِطْ	اُطْ
اَزْ	اِزْ	اُزْ	اَذْ	اِذْ	اُذْ
اَظْ	اِظْ	اُظْ	اَثْ	اِثْ	اُثْ
اَسْ	اِسْ	اُسْ	اَصْ	اِصْ	اُصْ
اَدْ	اِدْ	اُدْ	اَضْ	اِضْ	اُضْ

اَكْ اِكْ اُكْ اَقْ اِقْ اُقْ
اَهْ اِهْ اُهْ اَحْ اِحْ اُحْ
اَءْ اِءْ اُءْ اَعْ اِعْ اُعْ
اَخْ اِخْ اُخْ اَغْ اِغْ اُغْ
اَبْ اِبْ اُبْ اَمْ اِمْ اُمْ
اَوْ
و साकिन से पहले ज़ेर नहीं आता
اُوْ اَفْ اِفْ اُفْ
اَلْ اِلْ اُلْ اَنْ اِنْ اُنْ
اَرْ اِرْ اُرْ اَجْ اِجْ اُجْ
اَشْ اِشْ اُشْ اَیْ اِیْ
ي साकिन से पहले पेश नहीं आता
मश्क़
قُلْ اِنْ عَنْ مَنْ بَلْ

لَمْ	كُمْ	هُمْ	ذُقْ	قَدْ
اِصْطَبِرْ	مُسْتَطَرْ	فَاغْفِرْ	اَعْيُنْ	اَعْنَابًا
زَجْرَةٌ	نُطْفَةٍ	مُدْهِنُوْنَ	اَبْوَابًا	فَافْرُقْ
يُقْرِضُ	يُغْنِيْ	تَجْرِيْ	جَمْعًا	فَتْحٌ
مُؤْمِنِيْنَ	مُؤْمِنُوْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	مُؤْصَدَةٌ	اِقْرَاْ
شَاْنٌ	كَاْسًا	بِئْسَ	يَشَاْ	نَشَاْ
اِثْمٌ	يَبْحَثُ	اَحْيَا	اُخْرٰى	اِذْهَبْ
اُشْدُدْ	اِرْكَبْ	حُشِرَتْ	نُشِرَتْ	اُحْضِرَتْ
طُمِسَتْ	فُرِجَتْ	نُسِفَتْ	يُظْلَمُوْنَ	يَظْهَرُ
اِصْبِرْ	بَيْنَكُمْ	بَيْنَهُمْ	فَضْلِكَ	عَلَيْهِمْ
اَعْمَالَهُمْ	اَعْمَالَكُمْ	اَيْدِيْهِمْ	يَسْتَبْدِلْ	يَسْتَفْتِحُوْنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सबक़ नम्बर (12) : नून साकिन और तन्वीन (इज़्हार , इख़्फ़ा)

- नून साकिन और तन्वीन के चार क़ाइदे हैं (1) इज़्हार (2) इख़्फ़ा (3) इदग़ाम (4) इक़्लाब ।
- (1) इज़्हार : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े ह़ल्क़ी में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इज़्हार होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में ग़ुन्ना नहीं करेंगे । हुरूफ़े ह़ल्क़ी छ "6" हैं और वोह येह हैं :
ء، ه، ع، ح، غ، خ
- (2) इख़्फ़ा : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़्फ़ा में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इख़्फ़ा करें या'नी नून साकिन और तन्वीन में ग़ुन्ना कर के पढ़ें । हुरूफ़े इख़्फ़ा पन्दरह "15" हैं और वोह येह हैं :
ت، ث، ج، د، ذ، ز، س، ش، ص، ض، ط، ظ، ف، ق، ك
- नोट : इदग़ाम और इक़्लाब के क़ाइदे सबक़ नम्बर 14 में मौजूद हैं ।

مِنْ حَكِيْمٍ	مِنْ عَلَقٍ	مِنْ هَادٍ	مِنْ اَجَلٍ
مِنْ ثَمَرَةٍ	فَمَنْ تَبِعَ	مِنْ خَوْفٍ	مِنْ غَفُوْرٍ
فَاِنْ زَلَلْتُمْ	مِنْ ذَهَبٍ	مِنْ دُوْنِكُمْ	مِنْ جُوْعٍ
اِنْ ضَلَلْتُ	مِنْ صَلْصَالٍ	مَنْ شَكَرَ	مَنْ سَفِهَ
مِنْ قَبْلُ	مِنْ فُرُوْجٍ	مَنْ ظَلَمَ	مِنْ طِيْنٍ
اَنْعَمْتَ	مِنْهُمْ	يَنْئَوْنَ	مِنْ كِتٰبٍ

وَانْحَرْ فَسَيُنْغِضُوْنَ وَالْمُنْخَنِقَةُ اَنْتَ

تَنْسَوْنَ نُنْشِزُهَا يَنْصُرُوْنَ مَنْضُوْدٍ

يَنْطِقُوْنَ اُنْظُرْ اَنْفُسِكُمْ يَنْقُضُوْنَ

مِنْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عَدْنٍ تَجْرِيْ

بَلَدًا اٰمِنًا قَوْلًا ثَقِيْلًا شِهَابٌ ثَاقِبٌ

نُوْحًا هَدَيْنَا فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ خَلْقٍ جَدِيْدٍ

جُرُفٍ هَارٍ كَاْسًا دِهَاقًا بَخْسٍ دَرَاهِمَ

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ سِرَاعًا ذٰلِكَ يَتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ

خُلُقٍ عَظِيْمٍ صَعِيْدًا زَلَقًا يَوْمَئِذٍ زُرْقًا

قَرْضًا حَسَنًا قَوْلًا سَدِيْدًا بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ

مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ عَذَابٌ شَدِيْدٌ

قَوۡمًا غَيۡرَكُمۡ — عَمَلًا صَالِحًا — رِجَالٌ صَدَقُوۡا

قَلِيۡلَةٍ غَلَبَتۡ — عَذَابًا ضِعۡفًا — مُسۡفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ

عَلِيۡمٌ خَبِيۡرٌ — سَبۡحًا طَوِيۡلًا — سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا

رَفۡرَفٍ خُضۡرٍ — سَحَابٌ ظُلُمٰتٌ — نَفۡسٍ ظَلَمَتۡ

قَوۡمًا فَاسِقِيۡنَ — سُبُلًا فِجَاجًا — ثَمَنًا قَلِيۡلًا

فَتۡحٌ قَرِيۡبٌ — رَسُوۡلٍ كَرِيۡمٍ — كِرَامًا كَاتِبِيۡنَ

يَا سَمِيۡعُ

100 बार रोज़ाना जो पढ़े और इस दौरान गुफ़्त-गू न करे और पढ़ कर दुआ मांगे ।

إن شاء الله عزوجل जो मांगेगा पाएगा ।

(40 रूहानी इलाज, स. 7)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (13) : तश्दीद

- तीन दन्दान " ـّـ " वाली शक्ल को तश्दीद कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशद्दद कहते हैं।
- मुशद्दद ह़र्फ़ को दो मर्तबा पढ़ें एक मर्तबा अपने से पहले वाले मु-तह़र्रिक ह़र्फ़ से मिला कर और दूसरी मर्तबा ख़ुद अपनी ह़-र-कत के मुत़ाबिक़ ज़रा रुक कर।
- नून मुशद्दद और मीम मुशद्दद में हमेशा ग़ुन्ना होता है ग़ुन्ना के मा'ना नाक में आवाज़ ले जाना है ग़ुन्ना की मिक़्दार एक अलिफ़ के बराबर है।
- जब ह़ुरूफ़े क़ल्क़ला मुशद्दद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करते हुए क़ल्क़ला करेंगे।
- पहला ह़र्फ़ मु-तह़र्रिक, दूसरा ह़र्फ़ साकिन और तीसरा ह़र्फ़ मुशद्दद हो तो अक्सर मर्तबा (हमेशा नहीं) साकिन ह़र्फ़ को छोड़ देंगे और मु-तह़र्रिक ह़र्फ़ को मुशद्दद ह़र्फ़ से मिला कर पढ़ेंगे जैसे عَبَدْتُّمْ (को عَبَتُّمْ पढ़ेंगे)
- इस सबक़ में तश्दीद की मश्क़ के साथ साथ ह़ुरूफ़े क़रीबुस्सौत या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

اُطَّ	اِطَّ	اَطَّ	اُتَّ	اِتَّ	اَتَّ
اُذَّ	اِذَّ	اَذَّ	اُزَّ	اِزَّ	اَزَّ
اُثَّ	اِثَّ	اَثَّ	اُظَّ	اِظَّ	اَظَّ
اُصَّ	اِصَّ	اَصَّ	اُسَّ	اِسَّ	اَسَّ
اُضَّ	اِضَّ	اَضَّ	اُدَّ	اِدَّ	اَدَّ
اُقَّ	اِقَّ	اَقَّ	اُكَّ	اِكَّ	اَكَّ

اَهَّ اِهَّ اُهَّ اَحَّ اِحَّ اُحَّ
اَعَّ اِعَّ اُعَّ اَخَّ اِخَّ اُخَّ
اَبَّ اِبَّ اُبَّ اَمَّ اِمَّ اُمَّ
اَوَّ اِوَّ اُوَّ اَفَّ اِفَّ اُفَّ
اَلَّ اِلَّ اُلَّ اَنَّ اِنَّ اُنَّ
اَرَّ اِرَّ اُرَّ اَجَّ اِجَّ اُجَّ
اَشَّ اِشَّ اُشَّ اَیَّ اِیَّ اُیَّ
رَبِّ رَبِّیْ رَبِّهٖ اِنَّ اِنَّا اِنِّیْ
مِنَّا مِنِّیْ ثُمَّ وَلَمَّا حَبَّبَ اَحَبَّ
وَالتِّیْنِ بِالتَّقْوٰی اَلثَّاقِبُ ثَجَّاجًا فِی الْحَجِّ شُحَّ
مُسَخَّرَاتٍ صَدَّقَ تَصَدّٰی اَلدَّرَجَاتِ مِنَ الدَّمْعِ وَالذّٰکِرِیْنَ
اَلرَّحْمٰنُ نُزِّلَ فَسَنُیَسِّرُهٗ وَالشَّمْسِ نَقُصُّ وَالصّٰلِحِیْنَ
فَضَّلْنَا وَالضُّحٰی وَالطُّوْرِ وَالطَّیْرِ اَلطَّلَاقُ وَالظَّاهِرُ
لِلظّٰلِمِیْنَ سُعِّرَتْ یُوَفَّ حُقَّتْ حَقٌّ رَکَّبَکَ
وَالَّذِیْنَ مِمَّا اُمَّةٍ فَاُمُّهٗ مُسَمًّی جَنّٰتٍ

وَالنّٰشِطٰتِ	وَالنَّجْمِ	كُوِّرَتْ	مُطَهَّرَةً	سُيِّرَتْ	يَذَّكَّرُ
لِيَدَّبَّرُوْا	ذُرِّيَّتَهٗ	مُزَّمِّلُ	مُدَّثِّرُ	عَلَى النَّبِيِّ	يَسَّمَّعُوْنَ
عِلِّيُّوْنَ	يَزَّكّٰى	مِنَ الطَّيِّبٰتِ	اِنَّ الظَّنَّ	مَدَّ الظِّلَّ	شَرِّ النَّفّٰثٰتِ
يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ		رَبُّ السَّمٰوٰتِ		اَحَطْتُّ	بَسَطْتَّ
نَخْلُقْكُّمْ	قَدْ تَّبَيَّنَ	عَبَدْتُّمْ	اِذْ ظَّلَمُوْٓا	قَدْ دَّخَلُوْا	اِذْ ذَّهَبَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (14) : नून साकिन और तन्वीन (इदग़ाम, इक़्लाब)

(3) इदग़ाम : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इदग़ाम होगा। "रा और लाम" में बिग़ैर गुन्ना के और बाक़ी चार हुरूफ़ में गुन्ना के साथ। हुरूफ़े यर-मलून छ "6" हैं और वोह येह हैं : ى ، ر ، م ، ل ، و ، ن

(4) इक़्लाब : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हर्फ़ ب आ जाए तो इक़्लाब होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़्फ़ा करें या'नी गुन्ना कर के पढ़ें।

इदग़ाम के हिज्जे इस तरह करें जैसे مَنْ يَّقُوْلُ : मीम नून या ज़बर مَنْ يَ , या ज़बर يَ = مَنْ يَ , مَنْ يَّقُوْ = قُوْ पेश क़ाफ़ वाव , लाम पेश لُ = مَنْ يَّقُوْلُ

इक़्लाब के हिज्जे इस तरह करें जैसे مِنْ بَعْدِ : मीम नून, मीम ज़ेर مِنْ , बा ऐन ज़बर بَعْ = مِنْ بَعْ , दाल ज़ेर دِ = مِنْ بَعْدِ

مَنْ يَّقُوْلُ	مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ	مِنْ يَّوْمٍ	مِنْ وَّلِيٍّ

مِنْ مَّشْهَدٍ	مِنْ مِّثْلِهٖ	مِنْ نَّصِيْرٍ	مِنْ نُّطْفَةٍ
مِنْ رَّبِّكَ	مِنْ رَّبِّهِمْ	مِنْ لَّدُنْهُ	يَكُنْ لَّهٗ
كِتٰبًا يَّلْقٰهُ	رَجُلٌ يَّسْعٰى	هُدًى وَّذِكْرٰى	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ	سِرَاجًا مُّنِيْرًا	حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ	خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ	رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	مُصَدِّقٌ لِّمَا	وَيْلٌ لِّكُلِّ
مِنْ بَعْدِ	مِنْ بَقْلِهَا	اَنْۢبِئْهُمْ	لَيُنْۢبَذَنَّ
قَوْلًا بَلِيْغًا	خَبِيْرًا بَصِيْرًا	جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ	كِرَامٍ بَرَرَةٍ
حِلٌّ بِهٰذَا	صُمٌّ بُكْمٌ		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (15) : मीम साकिन के क़वाइद

- मीम साकिन के तीन क़ाइदे हैं। (1) इदग़ामे श-फ़वी (2) इख़्फ़ाए श-फ़वी (3) इज़्हारे श-फ़वी।
- (1) इदग़ामे श-फ़वी : مِيْم साकिन के बा'द दूसरी مِيْم आ जाए तो مِيْم साकिन में इदग़ामे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।
- (2) इख़्फ़ाए श-फ़वी : مِيْم साकिन के बा'द हर्फ़ ب आ जाए तो مِيْم साकिन में इख़्फ़ाए श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।
- (3) इज़्हारे श-फ़वी : مِيْم साकिन के बा'द हर्फ़ ب और م के इलावा कोई भी हर्फ़ आ जाए तो مِيْم साकिन में इज़्हारे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना नहीं करेंगे।

هُمْ فِيْهَا	كُنْتُمْ بِهٖ	اَلَمْ تَرَ	اَنْتُمْ مُّظْلِمُوْنَ
اَمْضٰى	تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ	وَالْاَمْرُ	وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ
وَاَمْطَرْنَا	عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ	لَمْ يَلِدْ	اٰتَيْنٰكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ
اَلَمْ نَشْرَحْ	تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ	لَكُمْ دِيْنُكُمْ	فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ
اَمْ صَبَرْنَا	وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ	وَخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا	وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ
عَلَيْهِمْ غَضَبٌ	بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ	ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ	لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (16) : तफ़्ख़ीम व तरक़ीक़

- तफ़्ख़ीम के मा'ना ह़र्फ़ को पुर या'नी मोटा पढ़ना और तरक़ीक़ के मा'ना ह़र्फ़ को बारीक पढ़ना है।
- तीन हुरूफ़ اَلِفْ، لَامْ، رَا कभी पुर या'नी मोटे और कभी बारीक पढ़े जाते हैं।
- اَلِفْ : अलिफ़ से पहले अगर पुर ह़र्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को पुर और बारीक ह़र्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को बारीक पढ़ें।
- لَامْ : इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَامْ से पहले ह़र्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَامْ को पुर पढ़ें और इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَامْ से पहले ह़र्फ़ के नीचे ज़ेर हो तो इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَامْ को बारीक पढ़ें।
- इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَامْ के इलावा बाक़ी तमाम لَامْ बारीक पढ़ें।
- رَا को पुर पढ़ने की सूरतें : رَا पर ज़बर या पेश हो, رَا पर दो ज़बर या दो पेश हों, رَا पर खड़ा ज़बर हो,

را साकिन से पहले ह़र्फ़ पर ज़बर या पेश हो, را साकिन से पहले आ़रिज़ी ज़ेर हो, را साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो, را साकिन के बा'द हुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई ह़र्फ़ उसी कलिमे में हो ।

- را को बारीक पढ़ने की सूरतें : را के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों, را साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली उसी कलिमे में हो, را साकिन से पहले یائے साकिना हो ।
- आ़रिज़ी ह़-र-कत : क़ुरआने पाक में बा'ज़ कलिमात अलिफ़ से शुरूअ़ होते हैं और अलिफ़ पर कोई ह़-र-कत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी ह़-र-कत लगा कर पढ़ेंगे वोह ह़-र-कत आ़रिज़ी होगी जैसे اِرْتَضٰی के अलिफ़ के नीचे ज़ेरे आ़रिज़ी है ।

नोट : एक ही कलिमे में را साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली हो और इस के बा'द ह़र्फ़े मुस्ता'लिया हो तो را साकिन को पुर पढ़ेंगे जैसे مِرْصَادٍ

مَفَازًا	مَالًا	كَانَ	سِرَاجًا	صِرَاطَ	قَالَ
طَعَامٍ	غَاسِقٍ	عَابِدٌ	خَالِدًا	تَابُوْا	طَالِبٌ
مِنَ اللّٰهِ	هُوَ اللّٰهُ	اِنَّ اللّٰهَ	فَاللّٰهُ	وَاللّٰهُ	اَللّٰهُ
بِسْمِ اللّٰهِ	بِاللّٰهِ	لِلّٰهِ	قَالُوا اللّٰهُمَّ	رَضِيَ اللّٰهُ	رَسُوْلُ اللّٰهِ
صَلٰوةً	عَلٰی	اِنَّ الَّذِيْنَ	اِلَّا الَّذِيْنَ	مَاوٰىهُمْ	قُلِ اللّٰهُمَّ
اَجْرٌ	اَجْرًا	اَكْثَرُ	رُزِقُوْا	اَلَمْ تَرَ	رَجُلٌ
اِرْجِعْ	يُرْزَقُوْنَ	تُرْجَعُوْنَ	اَمْ صَبَرْنَا	عَرْشٌ	اِبْرٰهِيْمَ
اِنِ ارْتَبْتُمْ	رَبِّ ارْجِعُوْنِ	رَبِّ ارْحَمْهُمَا	اِرْكَعُوْا	اِرْجِعِیْ	اِرْجِعُوْا
وَالنَّهَارِ	فِیْ قِرْطَاسٍ	مِرْصَادٍ	فِرْقَةٍ	كُلُّ فِرْقٍ	اَمِ ارْتَابُوْا
نَذِيْرٌ	خَيْرٌ	قُمْ فَاَنْذِرْ	فَاصْبِرْ	اَمْرٍ	رِجَالٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (17) : मद्दात

- मद के मा'ना दराज़ करना और खींचना है। मद के दो सबब हैं (1) हम्ज़ह ء (2) सुकून ْ
- मद की छ[6] अक़्साम हैं। (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे आ़रिज़ (6) मद्दे लीन आ़रिज़।
- (1) मद्दे मुत्तसिल : हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह उसी कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा। जैसे جَآءَ
- (2) मद्दे मुन्फ़सिल : हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह दूसरे कलिमे में हो तो मद्दे मुन्फ़सिल होगा। जैसे فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ
- मद्दे मुत्तसिल और मद्दे मुन्फ़सिल को दो, ढाई या चार अलिफ़ तक खींच कर पढ़ें।
- (3) मद्दे लाज़िम : हुरूफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (ّ ، ْ) हो तो मद्दे लाज़िम होगा। जैसे جَآنٌّ
- (4) मद्दे लीन लाज़िम : हुरूफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (ْ) हो तो मद्दे लीन लाज़िम होगा। जैसे عَيْٓنْ
- मद्दे लाज़िम और मद्दे लीन लाज़िम को तीन, चार या पांच अलिफ़ तक खींच कर पढ़ें।
- (5) मद्दे आ़रिज़ : हुरूफ़े मद्दा के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो (या'नी वक़्फ़ की वजह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए) तो मद्दे आ़रिज़ होगा। जैसे مُسْلِمُوْنَ ○
- (6) मद्दे लीन आ़रिज़ : हुरूफ़े लीन के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो (या'नी वक़्फ़ की वजह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए) तो मद्दे लीन आ़रिज़ होगा। जैसे شَفَتَيْنْ ○
- मद्दे आ़रिज़ और मद्दे लीन आ़रिज़ को तीन अलिफ़ तक खींच कर पढ़ें।
- मद्दात के हिज्जे इस त़रह़ करें जैसे جِآئَ : جِيْم يَا ज़ेर = جِيْ , هَمْزَه ज़बर ءَ = جِآئَ
ضَآلًّا : ضَادْ اَلِفْ لَامْ ज़बर = ضَآلَ , لَامْ दो ज़बर لًا = ضَآلًّا

حَدَآئِقَ	اُولٰٓئِكَ	سَيِّئَٰتٌ	وَالِىٓءٍ	جِآئَ	جَآءَ
هٰٓؤُلَآءِ	يٰٓاَرْضُ	قَالُوْٓا اٰمَنَّا	بِمَآ اُنْزِلَ	اَوْلِيَآءَ	قُرُوْٓءٍ

يٰبَنِىٓ اِسْرَآءِيْلَ	ضَآلًّا	دَآبَّةٍ	آلْـٰٔنَ	ءٰٓالذّٰكِرِيْنَ

جَآنٌّ	مُدْهَآمَّتٰنِ	اَتُحَآجُّوْٓنِّىْ	كَآفَّةً	اَلْحَآقَّةُ	وَالصّٰٓفّٰتِ
حَآجُّوْكَ	وَحَآجَّهٗ	تَحٰٓضُّوْنَ	يُحَآدُّوْنَ	اَنْ يَّتَمَآسَّا	وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ۝	يَتَسَآءَلُوْنَ ۝	رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝	خَوْفٍ ۝	قُرَيْشٍ ۝

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (18) : हुरूफ़े मुक़त्तआत

- हुरूफ़े मुक़त्तआत कुरआने पाक की बा'ज़ सूरतों के शुरूअ में आते हैं।
- इन हुरूफ़ को मुफ़्रिद हुरूफ़ की तरह अलग अलग इस तरह पढ़ें कि मद्दात की मिक़्दार पूरी अदा हो नीज़ इख़्फ़ा व इदग़ाम आने की सूरत में गुन्ना भी करें।
- الٓمّٓ ۝ اللّٰهُ को पढ़ने के दो तरीक़े हैं (1) वस्ल اَلِفْ لَآمْ مِّيْمَ اللّٰهُ (2) वक़्फ़ اَلِفْ لَآمْ مِّيْمْ ۝ اَللّٰهُ

صٓ صَآدْ	قٓ قَآفْ	نٓ نُوْنْ	طٰهٰ طَاهَا
يٰسٓ يَاسِيْنْ	طٰسٓ طَاسِيْنْ	حٰمٓ حَامِيْمْ	الٓرٰ اَلِفْ لَآمْ رَا
الٓمّٓ اَلِفْ لَآمْ مِّيْمْ	الٓمّٓرٰ اَلِفْ لَآمْ مِّيْمْ رَا	حٰمٓ حَامِيْمْ	عٓسٓقٓ عَيْنْ سِيْنْ قَآفْ

طٰسٓمّٓ
طَاسِيْنْ مِيْمْ
الٓمّٓصٓ
اَلِفْ لَامْ مِيْمْ صَادْ
الٓمّٓ اللّٰهُ
اَلِفْ لَامْ مِيْمْ اللّٰهُ
كٓهٰيٰعٓصٓ
كَافْ هَا يَا عَيْنْ صَادْ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط
सबक़ नम्बर (19) : ज़ाइद अलिफ़ "اْ"
क़ुरआने पाक में बा'ज़ जगह अलिफ़ पर गोल दाएरे का निशान "ₒ" होता है ऐसे अलिफ़ को ज़ाइद अलिफ़ कहते हैं इस अलिफ़ को न पढ़ें ।
(हर जगह)
(हर जगह)

इन छ[6] कलिमात में इस निशान "ο" वाले अलिफ़ को वस्ल में न पढ़ें लेकिन वक़्फ़ में पढ़ें ।

لٰكِنَّا	الظُّنُوْنَا	الرَّسُوْلَا	السَّبِيْلَا	قَوَارِيْرَا (पहला)	اَنَا
پ ۱۵ ، الكهف ۳۸	پ ۲۱ ، الاحزاب ۱۰	پ ۲۲ ، الاحزاب ۶۶	پ ۲۲ الاحزاب ۶۷	پ ۲۹ ، الدهر ۱۵	(हर जगह)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (20): मु-तफ़र्रिक़ क़वाइद

इज़हारे मुत्लक़ : इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून एक कलिमे में आने की वजह से इदग़ाम नहीं बल्कि इज़्हारे मुत्लक़ होगा इस लिये इन चारों कलिमात में ग़ुन्ना न करें ।

دُنْيَا	بُنْيَانٌ	صِنْوَانٌ	قِنْوَانٌ

सक्तह : आवाज़ रोक कर सांस लिये बिग़ैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे । इन चार कलिमात में सक्तह वाजिब है सक्ते का हुक्म येह है कि मु-तहर्रिक को साकिन किया जाए और दो ज़बर को अलिफ़ से बदल कर पढ़ा जाए ।

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ	كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ	مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا	عِوَجًا ۜ قَيِّمًا
پ ۲۹ ، القيٰمة ۲۷	پ ۳۰ ، المطففين ۱۴	پ ۲۳ ، يٰسٓ ۵۲	پ ۱۵ ، الكهف ۱

صٓ : क़ुरआने पाक में चार कलिमात صاد से लिखे जाते हैं और صاد पर बारीक سين भी लिखा होता है इन के पढ़ने की तफ़्सील इस तरह है : (1) और (2) में सिर्फ़ س पढ़ें, (3) में ص और س दोनों पढ़ना जाइज़ है, (4) में सिर्फ़ ص पढ़ें ।

① يَبْصُۜطُ	② بَصْۜطَةً	③ اَمْ هُمُ الْمُصَۜيْطِرُوْنَ	④ بِمُصَۜيْطِرٍ
پ ۲ ، البقرة ۲۴۵	پ ۸ ، الاعراف ۶۹	پ ۲۷ ، الطور ۳۷	پ ۳۰ ، الغاشية ۲۲

तस्हील : तस्हील के मा'ना हैं नरमी करना या'नी दूसरे हम्ज़ह को नरमी के साथ पढ़ें। कुरआने पाक में सिर्फ़ एक कलिमे में तस्हील वाजिब है।

इमालह : ज़बर को ज़ेर की तरफ़ और الف को يا की तरफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं। इमालह की را को उर्दू के लफ़्ज़ क़तरे की را की तरह पढ़ें या'नी رى नहीं बल्कि رے पढ़ें।

इमालह के हिज्जे इस तरह करें : مجر ها= ها الف ,مجر = رے इमाले वाली را ,مج=ज़बर ميم جيم हा الف ज़बर

بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ इस कलिमे में لام से पहले और لام के बा'द दोनों الف न पढ़ें बल्कि لام को ज़ेर दे कर पढ़ें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (21) : वक़्फ़

वक़्फ़ : वक़्फ़ के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं। या'नी जिस कलिमे पर वक़्फ़ करें तो उस कलिमे के आख़िरी हर्फ़ पर आवाज़ और सांस दोनों को ख़त्म कर दें।

कलिमे के आख़िरी हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर, दो पेश, खड़ा ज़ेर, उल्टा पेश हो तो उस हर्फ़ को वक़्फ़ में साकिन कर दें।

कलिमे के आख़िरी हर्फ़ पर दो ज़बर हों तो उन्हें वक़्फ़ में अलिफ़ से बदल दें।

कलिमे के आख़िर में गोल تا "ة" पर ख़्वाह कोई भी ह़-र-कत हो या तन्वीन उसे वक़्फ़ में ها साकिन "هْ" से बदल दें।

खड़ा ज़बर, हुरूफ़े मद्दा और साकिन हर्फ़ वक़्फ़ में तब्दील नहीं होते।

मुशद्दद हर्फ़ पर वक़्फ़ की सूरत में तश्दीद बाक़ी रखें मगर ह़-र-कत को ज़ाहिर न होने दें।

नून क़ुत्नी : तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को

ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है इसे नून क़ुत़्नी कहते हैं।

अ़लामाते वक़्फ़ : चन्द अ़लामाते वक़्फ़ की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

○ : येह वक़्फ़े ताम और आयत मुकम्मल होने की अ़लामत है यहां ठहरना चाहिये।

م : येह वक़्फ़े लाज़िम की अ़लामत है यहां ज़रूर ठहरना चाहिये।

ط : येह वक़्फ़े मुत़्लक़ की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर है।

ج : येह वक़्फ़े जाइज़ की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज़ है।

ز : येह वक़्फ़े मुजव्वज़ की अ़लामत है यहां ठहरना जाइज़ मगर न ठहरना बेहतर है।

ص : येह वक़्फ़े मुरख़्ख़स की अ़लामत है यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।

لا : अगर आयत के ऊपर لا लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है आयत के इलावा لا लिखा हो तो न ठहरें।

इआ़दह : वक़्फ़ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इआ़दह कहते हैं।

بِالْحَقِّ ۚلا بِالْحَقّْ ۚلا	شَفَتَيْنِ ○ شَفَتَيْنْ ○	فِيْهِ ۚط فِيْهْ ۚط	مُسْتَقِيْمَ ○ مُسْتَقِيْمْ ○	نٰدِمِيْنَ ○ نٰدِمِيْنْ ○	صٰدِقِيْنَ ○ صٰدِقِيْنْ ○
قِسْطِ ۚج قِسْطْ ۚج	شَيْءٌ ۚط شَيْءْ ۚط	شَهْرٍ ○ شَهْرْ ○	مِنْ قَبْلُ ۚج مِنْ قَبْلْ ۚج	يَشَآءُ ۚط يَشَآءْ ۚط	نَسْتَعِيْنُ ○ نَسْتَعِيْنْ ○
بِاَمْرِهٖ ○ بِاَمْرِهْ ○	عِبَادِهٖ ○ عِبَادِهْ ○	بِهٖ ۚج بِهْ ۚج	بَرْقٌ ۚج بَرْقْ ۚج	قَدِيْرٌ ○ قَدِيْرْ ○	لَهُوْ ۚط لَهُوْ ۚط
نَبِيًّا ○ نَبِيَّا ○	عِلْمًا ○ عِلْمَا ○	اَلْفَافًا ○ اَلْفَافَا ○	مَوَازِيْنُهٗ ○ مَوَازِيْنُهْ ○	اَخْلَدَهٗ ○ اَخْلَدَهْ ○	رَبَّهٗ ○ رَبَّهْ ○

قُوَّةً	رَقَبَةٍ	جَارِيَةٌ	وَتَوَلّٰى	مِنَ الْاُوْلٰى	فَتَرْضٰى
قُوَّةً	رَقَبَةٍ	جَارِيَةٌ	وَتَوَلّٰى	مِنَ الْاُوْلٰى	فَتَرْضٰى
وَانْحَرْ	فَارْغَبْ	فَحَدِّثْ	فِيْهَا	تَهْتَدُوْا	قَوْلِيْ
وَانْحَرْ	فَارْغَبْ	فَحَدِّثْ	فِيْهَا	تَهْتَدُوْا	قَوْلِيْ

خَيْرًا الْوَصِيَّةُ	شَيْئًا السَّمَآءِ	مُنِيْبٍ ادْخُلُوْهَا
خَيْرًا الْوَصِيَّةُ	شَيْئًا السَّمَآءِ	مُنِيْبٍ ادْخُلُوْهَا
مُبِيْنٍ اقْتُلُوْا	قَدِيْرُ الَّذِيْ	خَبِيْرًا الَّذِيْ
مُبِيْنٍ اقْتُلُوْا	قَدِيْرُ الَّذِيْ	خَبِيْرًا الَّذِيْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (22) : नमाज़

- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें।
- इस सबक़ में भी पिछले तमाम अस्बाक़ के क़वाइद और हुरूफ़ की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें बिल ख़ुसूस हुरूफ़े क़रीबुस्सौत या 'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क़ करें।
- याद रखिये ! इन हुरूफ़ में फ़र्क़ न करने की वजह से अगर मा 'ना फ़ासिद हो गए तो नमाज़ न होगी।

तक्बीरे तह़रीमा : اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सना : سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

तअ़व्वुज़ : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

तस्मियह : بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

सू-रतुल फ़ातिहा :

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ ۝
اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ۝ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ
اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۝ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ۝ اٰمِيۡن

सू-रतुल इख़्लास : بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمۡ يَلِدۡ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۝ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

तस्बीहे रुकूअ : سُبۡحٰنَ رَبِّيَ الۡعَظِيۡمِ

तस्मीअ : سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنۡ حَمِدَهٗ

तह्मीद : رَبَّنَا وَلَكَ الۡحَمۡدُ

तस्बीहे सज्दा : سُبۡحٰنَ رَبِّيَ الۡاَعۡلٰى

तशह्हुद : اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ
وَرَحۡمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيۡنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيۡنَ ۝
اَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ ۝

दुरूदे इब्राहीम : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰۤى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰۤى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰۤى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰۤى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

दुआए मासूरह : اَللّٰهُمَّ رَبِّ اجْعَلْنِىْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْلِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

सलाम : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

दुआए कुनूत : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۝

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰۤئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِىِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुवाल व जवाब

सुवाल :- हुरूफ़े मुफ़्रिदात कितने हैं? सबक़ नम्बर 1

जवाब :- हुरूफ़े मुफ़्रिदात **29** हैं।

सुवाल :- हुरूफ़े मुस्ता'लिया कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 1

जवाब :- हुरूफ़े मुस्ता'लिया सात हैं और वोह येह हैं - خ ، ص ، ض ، ط ، ظ ، غ ، ق

सुवाल :- **हुरूफ़े मुस्ता'लिया** को कैसे पढ़तें हैं और इन का मज्मूआ क्या है? सबक़ नम्बर 1

जवाब :- **हुरूफ़े मुस्ता'लिया** को हमेशा हर हालत में पुर या'नी मोटा पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ خُصَّ ضَغْطٍ قِظْ है।

सुवाल :- ह़-रकात किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 3

जवाब :- ज़बर ـَـ , ज़ेर ـِـ , पेश ـُـ को ह़-रकात कहते हैं।

सुवाल :- ह़-रकात को किस त़रह़ पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 3

जवाब :- ह़-रकात को बिग़ैर खींचे, बिग़ैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ेंगे।

सुवाल :- तन्वीन किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 5

जवाब :- दो ज़बर ـً , दो ज़ेर ـٍ , और दो पेश ـٌ को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आख़िर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की त़रह़ होती है।

सुवाल :- हुरूफ़े मद्दा कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 7

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा तीन हैं और वोह येह हैं اَلِف ، وَاو ، يَا

सुवाल :- اَلِف मद्दा, وَاو मद्दा और يَا मद्दा कब होगा? सबक़ नम्बर 7

जवाब :- اَلِف से पहले ज़बर हो तो اَلِف मद्दा, وَاو साकिन से पहले पेश हो तो وَاو मद्दा, يَا साकिन से पहले ज़ेर हो तो يَا मद्दा होगा।

सुवाल :- हुरूफ़े मद्दा को कैसे पढ़ते हैं? सबक़ नम्बर 7

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा को एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं।

सुवाल :- **खड़ी ह़-रकात** किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 8

जवाब :- खड़े ज़बर ـٰ , खड़े ज़ेर ـٖ और उल्टे पेश ـٗ को खड़ी ह़-रकात कहते हैं।

सुवाल :- खड़ी ह़-रकात को कैसे पढ़ते हैं? सबक़ नम्बर 8

जवाब :- खड़ी ह़-रकात को हुरूफ़े मद्दा की त़रह़ एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं।

सुवाल :- **हुरूफ़े लीन** कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 9

जवाब :- हुरूफ़े लीन दो हैं وَاوْ और يَا ।

सुवाल :- हुरूफ़े लीन को किस त़रह़ पढ़ते हैं? सबक़ नम्बर 9

जवाब :- हुरूफ़े लीन को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये नरमी से मा'रूफ़ पढ़ते हैं।

सुवाल :- وَاوْ लीन और يَا लीन कब होगा? सबक़ नम्बर 9

जवाब :- وَاوْ साकिन से पहले ज़बर हो तो وَاوْ लीन और يَا साकिन से पहले ज़बर हो तो يَا लीन होगा।

सुवाल :- **क़ल्क़ला** के क्या मा'ना हैं? सबक़ नम्बर 11

जवाब :- क़ल्क़ला के मा'ना जुम्बिश और ह़-र-कत के हैं या'नी इन हुरूफ़ के अदा होते वक़्त मख़्रज में जुम्बिश सी होती है जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकलती है।

सुवाल :- हुरूफ़े क़ल्क़ला कितने हैं, कौन कौन से हैं और इन का मज्मूआ़ क्या है? सबक़ नम्बर 11

जवाब :- हुरूफ़े क़ल्क़ला पांच हैं और वोह येह हैं ق، ط، ب، ج، د हुरूफ़े क़ल्क़ला का मज्मूआ़ قُطُبُ جَدٍّ है।

सुवाल :- हुरूफ़े क़ल्क़ला में कब क़ल्क़ला खूब ज़ाहिर होगा? सबक़ नम्बर 11

जवाब :- जब हुरूफ़े क़ल्क़ला साकिन हों तो उन में क़ल्क़ला खूब ज़ाहिर होगा।

सुवाल :- अगर क़ल्क़ला हुरूफ़ मुशद्दद हों तो उन्हें कैसे पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 11

जवाब :- जब क़ल्क़ला हुरूफ़ मुशद्दद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करेंगे।

सुवाल :- **हम्ज़ए साकिना** (أْ، ءْ) को कैसे पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 11

जवाब :- हम्ज़ए साकिना (أْ ، ءْ) को हमेशा झटका दे कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- नून साकिन और तन्वीन के कितने क़ाइदे हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 12

जवाब :- नून साकिन और तन्वीन के चार क़ाइदे हैं और वोह येह हैं इज़्हार, इख़्फ़ा, इदग़ाम, इक़्लाब।

सुवाल :- इज़्हार का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 12

जवाब :- नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े हल्क़ी में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इज़्हार होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल :- हुरूफ़े हल्क़ी कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 12

जवाब :- हुरूफ़े हल्क़ी छ[6] हैं और वोह येह हैं – ء ، ه ، ع ، ح ، غ ، خ

सुवाल :- इख़्फ़ा का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 12

जवाब :- नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़्फ़ा में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इख़्फ़ा होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना कर के पढ़ेंगे।

सुवाल :- हुरूफ़े इख़्फ़ा कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 12

जवाब :- हुरूफ़े इख़्फ़ा पन्दरह हैं और वोह येह हैं

ت ، ث ، ج ، د ، ذ ، ز ، س ، ش ، ص ، ض ، ط ، ظ ، ف ، ق ، ک ۔

सुवाल :- तश्दीद किसे कहते हैं और तश्दीद वाले हर्फ़ को क्या कहते हैं? सबक़ नम्बर 13

जवाब :- तीन दन्दान ـّـ वाली शक्ल को तश्दीद कहते हैं जिस हर्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशद्दद कहते हैं।

सुवाल :- نّون मुशद्दद और مّیم मुशद्दद में क्या होगा? सबक़ नम्बर 13

जवाब :- نّون मुशद्दद और مّیم मुशद्दद में हमेशा गुन्ना होगा।

सुवाल :- गुन्ना किसे कहते हैं और इस की मिक़्दार क्या है? सबक़ नम्बर 13

जवाब :- नाक में आवाज़ ले जा कर पढ़ने को गुन्ना कहते हैं गुन्ना की मिक़्दार एक अलिफ़ के बराबर है।

सुवाल :- मुशद्दद हर्फ़ को किस तरह पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 13

जवाब :- मुशद्दद हर्फ़ को दो[2] मर्तबा पढ़ेंगे एक मर्तबा अपने से पहले वाले मु-तहर्रिक हर्फ़ से मिला कर और दूसरी मर्तबा ख़ुद अपनी ह-र-कत के मुताबिक़ ज़रा रुक कर।

सुवाल :- **इदग़ाम** का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 14

जवाब :- नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इदग़ाम होगा। ر और ل में बिग़ैर गुन्ना के बाक़ी चार में गुन्ना के साथ।

सुवाल :- **हुरूफ़े यर-मलून** कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 14

जवाब :- **हुरूफ़े यर-मलून** छ[6] हैं और वोह येह हैं : ی ، ر ، م ، ل ، و ، ن

सुवाल :- **इक़्लाब** का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 14

जवाब :- नून साकिन या तन्वीन के बा'द हर्फ़ ب आ जाए तो इक़्लाब होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़्फ़ा करेंगे या'नी गुन्ना कर के पढ़ेंगे।

सुवाल :- **मीम साकिन** के कितने क़ाइदे हैं और वोह कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के तीन क़ाइदे हैं और वोह येह हैं **इदग़ामे श-फ़वी**, **इख़्फ़ाए श-फ़वी**, **इज़्हारे श-फ़वी**।

सुवाल :- **इदग़ामे श-फ़वी** का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के बा'द दूसरी م आ जाए तो मीम साकिन में इदग़ामे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।

सुवाल :- **इख़्फ़ाए श-फ़वी** का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के बा'द ب आ जाए तो मीम साकिन में इख़्फ़ाए श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।

सुवाल :- **इज़्हारे श-फ़वी** का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 15

जवाब :- मीम साकिन के बा'द ب और م **के इलावा कोई भी हर्फ़** आ जाए तो मीम साकिन में इज़्हारे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल :- **तफ़्ख़ीम** व **तरक़ीक़** के क्या मा'ना हैं? सबक़ नम्बर 16

जवाब :- **तफ़्ख़ीम** के मा'ना हर्फ़ को **पुर** पढ़ना और **तरक़ीक़** के मा'ना हर्फ़ को **बारीक** पढ़ना है।

सुवाल :- इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام को कब **पुर** और कब **बारीक** पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 16

जवाब :- इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام से पहले ह़र्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام को पुर पढ़ेंगे और इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام से पहले ह़र्फ़ के नीचे ज़ेर हो तो इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल :- اَلِفْ को कब **पुर** और कब **बारीक** पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 16

जवाब :- الف से पहले पुर ह़र्फ़ आ जाए तो الف को पुर और बारीक ह़र्फ़ आ जाए तो الف को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल :- را को **पुर** पढ़ने की सूरतें बताएं ? सबक़ नम्बर 16

जवाब :- (1) را पर ज़बर या पेश हो (2) را पर दो ज़बर या दो पेश हो (3) را पर खड़ा ज़बर हो (4) را साकिन से पहले ह़र्फ़ पर ज़बर या पेश हो (5) را साकिन से पहले आ़रिज़ी ज़ेर हो (6) را साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो (7) را साकिन के बा'द ह़ुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई ह़र्फ़ इसी कलिमे में हो तो इन सब सूरतों में را को **पुर** पढ़ेंगे।

सुवाल :- را को **बारीक** पढ़ने की सूरतें बताएं ? सबक़ नम्बर 16

जवाब :- (1) را के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों (2) را साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली इसी कलिमे में हो (3) را साकिन से पहले یاۓ साकिना हो तो इन सब सूरतों में را को **बारीक** पढ़ेंगे।

सुवाल :- आ़रिज़ी ज़ेर किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 16

जवाब :- क़ुरआने पाक में बा'ज़ कलिमात अलिफ़ से शुरूअ़ होते हैं और अलिफ़ पर कोई ह़-र-कत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी ह़-र-कत लगा कर पढ़ेंगे वोह आ़रिज़ी ह़-र-कत होगी जैसे اِرْجِعِیْ के الف के नीचे **ज़ेरे आ़रिज़ी** है।

सुवाल :- **मद** के क्या मा'ना हैं इस के कितने सबब हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- **मद** के मा'ना दराज़ करना और खींचना है **मद** के सबब दो "**2**" हैं (1) हम्ज़ह (2) सुकून।

सुवाल :- **मद** की कितनी क़िस्में हैं और कौन कौन सी हैं ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- **मद** की छ "**6**" क़िस्में हैं और वोह येह हैं (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे आ़रिज़ (6) मद्दे लीन आ़रिज़।

सुवाल :- **मद्दे मुत्तसिल** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह इसी कलिमे में हो तो **मद्दे मुत्तसिल** होगा।

सुवाल :- **मद्दे मुन्फ़सिल** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह दूसरे कलिमे में हो तो **मद्दे मुन्फ़सिल** होगा।

सुवाल :- **मद्दे मुत्तसिल** और **मद्दे मुन्फ़सिल** को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- **मद्दे मुत्तसिल** और **मद्दे मुन्फ़सिल** को दो, ढाई या चार अलिफ़ तक खींच कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- **मद्दे लाज़िम** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (ــّـ ، ــْـ) हो तो **मद्दे लाज़िम** होगा।

सुवाल :- **मद्दे लीन लाज़िम** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (ــْـ) हो तो **मद्दे लीन लाज़िम** होगा।

सुवाल :- **मद्दे लाज़िम** और **मद्दे लीन लाज़िम** को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- **मद्दे लाज़िम** और **मद्दे लीन लाज़िम** को तीन, चार या पांच अलिफ़ तक खींच कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- **मद्दे आ़रिज़** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े मद्दा के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो या'नी वक़्फ़ की वजह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए तो **मद्दे आ़रिज़** होगा।

सुवाल :- **मद्दे लीन आ़रिज़** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- हुरूफ़े लीन के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो या'नी वक़्फ़ की वजह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए तो **मद्दे लीन आ़रिज़** होगा।

सुवाल :- **मद्दे आ़रिज़** और **मद्दे लीन आ़रिज़** को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 17

जवाब :- **मद्दे आ़रिज़** और **मद्दे लीन आ़रिज़** को तीन अलिफ़ तक खींच कर पढ़ेंगे।

सुवाल :- **ज़ाइद अलिफ़** किसे कहते हैं और क्या उसे पढ़ते हैं ? सबक़ नम्बर 19

जवाब :- कुरआने पाक में बा'ज़ जगह अलिफ़ पर गोल दाएरा " **o** " का निशान होता है ऐसे अलिफ़ को ज़ाइद अलिफ़ कहते हैं और इस अलिफ़ को नहीं पढ़ते।

सुवाल :- **صِنْوَانٌ ، بُنْيَانٌ ، دُنْيَا** और **قِنْوَانٌ** के नून साकिन में कौन सा क़ाइदा होगा ? सबक़ नम्बर 20

जवाब :- इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून एक कलिमे में आने की वजह से इदग़ाम नहीं बल्कि **इज़्हारे मुत़्लक़** होगा इस लिये इन कलिमात में ग़ुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल :- सक्तह किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 20

जवाब :- आवाज़ रोक कर सांस लिये बिग़ैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे।

सुवाल :- तस्हील के क्या मा'ना हैं? सबक़ नम्बर 20

जवाब :- तस्हील के मा'ना नरमी करना है या'नी दूसरे हम्ज़ह को नरमी के साथ पढ़ना।

सुवाल :- **इमालह** किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 20

जवाब :- ज़बर को ज़ेर और الف को یَا की त़रफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं।

सुवाल :- **इमालह** की رَا को किस त़रह़ पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 20

जवाब :- **इमालह** की رَا को उर्दू के लफ़्ज़ क़त़रे की رَا की त़रह़ पढ़ेंगे। या'नी رِی नहीं बल्कि رے पढ़ेंगे।

सुवाल :- **वक़्फ़** के क्या मा'ना हैं? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- **वक़्फ़** के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं।

सुवाल :- **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो क्या करेंगे? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो उस ह़र्फ़ को साकिन कर देंगे।

सुवाल :- **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो क्या करेंगे? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो उसे अलिफ़ से बदल देंगे।

सुवाल :- **वक़्फ़** की ह़ालत में गोल تَا "ةٌ" हो तो क्या करेंगे? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- गोल تَا "ةٌ" पर ख़्वाह कोई भी ह़-र-कत हो उसे **वक़्फ़** में ھا साकिن "ہْ" से बदल देंगे।

सुवाल :- नून क़ुत़्ली किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है उसे नून क़ुत़्ली कहते हैं।

सुवाल :- **गोल दाएरा "O"** वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक़ नम्बर 21

जवाब :- येह **वक़्फ़े ताम** और **आयत मुकम्मल** होने की अ़लामत है। इस पर ठहरना चाहिये।

सुवाल :- م वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- येह **वक़्फ़े लाज़िम** की अ़लामत है यहां ज़रूर ठहरना चाहिये।

सुवाल :- ط वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- येह **वक़्फ़े मुत़्लक़** की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर है।

सुवाल :- ج वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- येह **वक़्फ़े जाइज़** की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज़ है।

सुवाल :- ز वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- येह **वक़्फ़े मुजव्वज़** की अ़लामत है यहां ठहरना जाइज़ मगर न ठहरना बेहतर है।

सुवाल :- ص वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- येह **वक़्फ़े मुरख़्ख़स** की अ़लामत है यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।

सुवाल :- لا पर वक़्फ़ की वज़ाहत फ़रमाएं ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- अगर आयत के ऊपर لا "O" लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है आयत के इलावा لا लिखा हो तो न ठहरें।

सुवाल :- **इआ़दह** किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 21

जवाब :- वक़्फ़ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इआ़दह कहते हैं।

सुवाल :- सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनन के लिये कौन सा वज़ीफ़ा पढ़ना चाहिये ? सफ़्हा नम्बर 7

जवाब :- सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनन के लिये चलते फिरते يَا خَبِيْرُ पढ़ना चाहिये।

सुवाल :- इ़ल्म के पांच द-रजात कौन कौन से हैं ? सफ़्हा नम्बर 7

जवाब :- इ़ल्म के पांच द-रजात येह हैं (1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना

(4) जो सीखा उस पर अ़मल करना (5) जो इ़ल्म ह़ासिल हुवा उसे दूसरों तक पहुंचाना।

सुवाल :- ह़ाफ़िज़े की मज़्बूती का वज़ीफ़ा बताइये? सफ़ह़ा नम्बर 12

जवाब :- يَا عَلِيْمُ 21 बार (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के 40 रोज़ तक नहार मुंह पीने (या पिलाने) से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ (पीने वाले का) ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत़ होगा।

सुवाल :- सबक़ याद करने से पहले कौन सी दुआ़ पढ़नी चाहिये?

जवाब :- सबक़ याद करने से पहले अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ़

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَ الْاِکْرَام पढ़नी चाहिये।

सुवाल :- **वुज़ू** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं?

जवाब :- वुज़ू के चार फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. पूरा चेहरा धोना 2. कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना 3. चौथाई सर का मस्ह़ करना 4. टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना।

सुवाल :- **ग़ुस्ल** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं?

जवाब :- ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. कुल्ली करना 2. नाक में पानी चढ़ाना 3. तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना।

सुवाल :- **तयम्मुम** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं?

जवाब :- तयम्मुम के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. निय्यत 2. सारे मुंह पर हाथ फैरना 3. कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह़ करना।

सुवाल :- **नमाज़** की कितनी **शराइत़** हैं और कौन कौन सी हैं?

जवाब :- नमाज़ की छ शराइत़ हैं और वोह येह हैं (1) त़हारत (2) सित्रे औ़रत (3) इस्तिक़्बाले क़िब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तह़रीमा।

सुवाल :- **नमाज़** के कितने **फ़राइज़** हैं और कौन कौन से हैं?

जवाब :- नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं :

(1) तक्बीरे तह़रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ़

(5) सुजूद (6) क़ा'दए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बि सुन्इ़ही।

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे

अर्ज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे
क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

हो जाए सबक़ याद मुझे जल्द इलाही (عَزَّوَجَلَّ)
या रब (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मेरा ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत़ बना दे

सुस्ती हो मेरी दूर उठूं जल्द सवेरे
तू मद्रसे में दिल मेरा अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) लगा दे

हो मद्रसे का मुझ से न नुक़्सान कभी भी
अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) यहां के मुझे आदाब सिखा दे

छुट्टी न करूं भूल के भी मद्रसे की मैं
अवक़ात का भी मुझ को तू पाबन्द बना दे

उस्ताद हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़
आ़दत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे

ख़स्लत हो शरारत की मेरी दूर इलाही (عَزَّوَجَلَّ) !
सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे

उस्ताद की करता रहूं हर दम मैं इत़ाअ़त
मां बाप की इ़ज़्ज़त की भी तौफ़ीक़ ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) दे

कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़
आक़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मदीना मेरे सीने को बना दे

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही (عَزَّوَجَلَّ)
बस शौक़ हमें ना'तो तिलावत का ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) दे

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें
अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) इ़बादत में मेरे दिल को लगा दे

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

सुन्नत के मुत़ाबिक़ मैं हर इक काम करूं काश
या रब (عَزَّوَجَلَّ) मुझे सुन्नत का मुबल्लिग़ भी बना दे

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं
हर एक मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा
चुप रहने का अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) सलीक़ा तू सिखा दे

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो अच्छा
मह़बूब (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

उस्ताद हों मां बाप हों अ़त्तार भी हों साथ
यूं ह़ज को चलें और मदीना भी दिखा दे

(اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم)

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net